NJESR/April-2026/Volume-8/Issue-4 **E-ISSN-2582-5836**

DOI-10.53571/NJESR.2026.8.4.20-23

महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसात्मक उत्पीडन का सामाजिक व मनोवैज्ञानिक

डॉ रजनी बाला सोनी

असिस्टेंट प्रोफेसर

श्री खुशाल दास विश्वविधालय

हनुमानगढ

(Received- 2 March 2026/Revised-20 March2026/Accepted-26 March2026/Published-3 April2026)

विश्लेषण : कोरोना काल के विशेष संदर्भ में इस महामारी ने आमजन को पूरी तरह प्रभावित किया तथा इसका सबसे ज्यादा असर महिलाओं पर देखा गया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के कारण हमारी सोच में काफी बदलाव आया जिस कारण आज नारी की प्रतिष्ठा बहुत हद तक बढी हैं। हम इस राह पर आगे बढ. ही रहे थे कि २४ मार्च २०२० का वो दिन जो इतिहास के पन्नों पर हमेशा के लिए दर्ज हो गया उसने सब कुछ रोक दिया। भारत में कोरोना वायरस और इसके कारण लॉकडाउन की सबसे बडी विडम्बना यह रही है कि महिलाओं के ए सबसे ज्यादा बोझिल और परेशानी का कारण बना चाहे वो कामकाजी थी या गैरकामकाजी। इस संकट भरे समय ने महिलाओं की स्थिति में और भी गिरावट ला दी। प्रत्येक दिन घरेलू हिंसा , आपसी कलह , नौकरी न रहने का डर आदि सब बातों ने महिलाओं को सबसे ज्यादा प्रभावित किया। इसके अलावा लॉकडाउन के दौरान घरों में भी भीड बढने से घरेलू हिंसा में भी तेजी आई जिससे रिश्तों में अलगाव बढा। हम ये नही कहते कि केवल महिला ही अवसाद का शिकार बनी। पुरुषों पर भी इस समय का असर देखने को मिला परन्तु महिला के मुकाबले कम था। समय के साथ -साथ महिला की स्थिति में सदैव परिवर्तन आये और यह परिवर्तन सामाजिक , आर्थिक व पारिवारिक रुप से देखा गया। नारी चाहे शहरी हो या ग्रामीण, पढी लिखी हो या अनपढ जिंदगी की लडाई उसने स्वंय लडी। बस बदला तो उसके संघर्ष का तरीका। आज भी वह तेजी से विकास तो कर रही हैं लेकिन उसकी समस्याएं जस की तस हैं। आज भी जब सुबह की शुरुआत अखबार से करते है तो स्त्री के शोषण और उत्पीडन के हजारों मामलें से वह भरा हुआ होता हैं। एक तरफ वह उपलब्धियों को छू रही हैं तो वही दूसरी तरफ अपने अस्तित्व के लिए लडाई स्वंय लड रही हैं जिसमें वह कितनी सफल रही, यह जानना सबके लिए जरुरी हैं। नारी की इसी सामाजिक स्थिति को समाज के सामने लाने व उसकी मनोदशा की तरफ ध्यान दिलवाने के लिए शोधार्थी ने निम्नांकित प्रकरण पर शोध करने की आवश्यकता को समझा और 'महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसात्मक उत्पीडन का सामाजिक व मनोवैज्ञानिक विश्लेषण : कोरोना काल के विशेष संदर्भ में' महिलाओं पर हो रही घरेलू हिंसा पर शोध अध्ययन का चुनाव किया गया।

शोध का महत्व -

महिलाओं से संबंधित घरेलू हिंसा सदैव ही शोध अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण विषय रहा हैं। शोधार्थियों ने समय-समय पर अपने शोध के द्वारा महिलाओं के साथ हो रही घरेलू हिंसा के अलग-अलग पहलूओं पर शोध अध्ययन किया हैं। कोरोना काल के कारण महिलाओं के साथ हो रही घरेलू हिंसा में अचानक से एक उछाल आया हैं जिस वजह से महिलाओं ने इस महामारी के समय खुद को बहुत ही अकेला व असहाय महसूस किया। इस महामारी की वजह से महिलाओं ने खुद को एक अलग ही मोड पर पाया क्योकि इस समय कुछ महिलाओं ने बहुत कुछ नया सीखा व उन्हें खुद को साबित करने का एक अवसर मिला। इसके विपरित कुछ महिलाओं ने इस दौरान खुद को बहुत असहाय महसूस किया। देखा जाए तो इस दौरान महिलाओं के साथ हो रही हिंसा के अलग-अलग रूप देखने को मिले व उन्होने खुद पर बहुत अधिक दबाव महसूस किया। इसीलिये शोधार्थी को यह विषय महत्वपूर्ण लगा और महिलाओं के साथ हो रही घरेलू हिंसा पर अध्ययन करने का निश्चय किया।

शोध समस्या का चयन -कोरोना काल के दौरान सभी लोगों का जीवन एकदम से रुक गया था। कोई भी कही भी आ जा नही सकते थे। इन सबका महिलाओं पर बहुत ज्यादा प्रभाव पडा। शोधार्थी भी एक महिला हैं और इस दौरान महिला सुरक्षा एवं सलाह केंद्र, महिला

पुलिस थाना में कार्यरत थी। कार्य के दौरान शोधार्थी ने महिलाओं के साथ हो रही घरेलू हिंसा को काफी करीब से देखा। जिस वजह से शोधार्थी को इस विषय पर शोध करने की इच्छा हुई। महिलाएं इस समय ना तो कही आ जा सकती थी और ना ही अपनी बात किसी को बता सकती थी क्योंकि उस समय परिवार के सभी सदस्य घर पर ही मौजूद थे तो महिलाएं अपने मायके वालों से फोन पर भी ढंग से बात नही कर सकती थी यदि किसी महिला के साथ मारपीट भी हुई है तो पीहर पक्ष से कोई उसके पास नही पहुंच सकता था और ना ही महिला अपने पीहर। इस महामारी ने महिलाओं की स्थिति में और भी ज्यादा मानसिक दबाव महसूस किया। महिलाओं पर घर के काम का बोझ,स्कूल बंद होने की वजह से उनकी सारा दिन देखभाल व उनकी पढाई का बोझ, पति का भी घर पर होने की वजह घर का काम भी बहुत ज्यादा बढ गया था जिससे उनकी मानसिक स्थिति बहुत ज्यादा बदल गई थी। वे मानसिक रूप से बहुत ज्यादा आहत हो गई थी। इस महामारी का महिलाओं के सामाजिक ,आर्थिक व मनोवैज्ञानिक स्थिति पर क्या प्रभाव पडा इन सब बातों को जानने के लिए इस समस्या का चयन किया गया।

शोध के उद्धेश्य -

उद्धेश्य किसी भी कार्य का वह अंतिम बिंदु हैं जहां तक पहुंचने का सतत् प्रयास किया जाता हैं। अत: शोध अध्ययन में समस्या को जानने के लिये उद्धेश्यों का निर्धारण जरुरी हो जाता हैं। महिलाओं की मानसिक स्थिति व घरेलू हिंसात्मक उत्पीडन का सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण व निम्नांकित उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए शोध कार्य का प्रयास किया गया हैं।

- कोरोना काल के दौरान महिलाओं की मानसिक स्थिति समझना व अध्ययन।
- महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा के कारण को समझना एवं महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करना।
- घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं की सामाजिक स्थिति को जानना।
- कोरोना काल के दौरान महिलाओं की मानसिक,सामाजिक व आर्थिक स्थिति पर पडे प्रभाव को जानना व समझना
- मीडिया का कोरोना के समय महिलाओं की स्थिति पर प्रभाव का मूल्यांकन कर अध्ययन करना।
- महिलाओं के विरुद्ध हो रही घरेलू हिंसात्मक उत्पीडन के कारणों का पता लगाना।
- महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में बाधक प्रमुख कारणों को जानना।

शोध प्रश्न -

- क्या कोरोना के दौरान आधुनिक तकनीक का प्रयोग महिलाओं के लिये सहायक सिद्ध हुआ हैं ?
- क्या कोरोना काल के दौरान महिलाओं को आधुनिक उपकरण का प्रयोग करते हुए अपने अधिकारों की जानकारी मिली और उसके आत्मविश्वास में बढोतरी हुई ?
- क्या कोरोना काल के दौरान महिलाओं पर घरेलू हिंसा के मामलों में अधिकता हुई ?
- क्या कोरोना काल के दौरान कामकाजी महिलाएं घरेलू कार्यों में व वर्क फ्रॉम होम में सामंजस्य नही बैठा पाने के कारण घरेलू हिंसा की शिकार हुई ?
- क्या सयुंक्त व एकल परिवारों की स्थिति में घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं में अंतर पाया गया ?
- क्या महिलाओं के साथ घर पर हो रही घरेलू हिंसा को कोरोना काल ने बढावा दिया हैं ?

शोध का न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध की प्रकृति व उद्धेश्यों के अनुसार शोधार्थी द्धारा अपनी समस्या के अध्ययन के लिए वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं। इस प्रकार की विधि का प्रयोग वर्तमान में चल रही समस्या के अध्ययन हेतु किया जाता हैं। इस शोध कार्य के लिए शोधार्थी ने राजस्थान राज्य के हनुमानगढ जिले में कोरोना काल के दौरान घरेलू हिंसा से पीडित महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक स्तर में वर्गीकरण कर महिलाओं पर हो रही घरेलू हिंसा की प्रभावी दशाओं को जानने का प्रयास किया गया हैं। शोधार्थी ने

हनुमानगढ जिले के अन्तर्गत आने वाली सात तहसीलों - टिब्बी, नोहर,भादरा,पीलीबंगा,रावतसर, हनुमानगढ,संगरिया में स्वरचित अनुसूची द्वारा साक्षात्कार तकनीक का प्रयोग का तथ्य संकलित किए।

निदर्शाता का चयन करते समय अध्ययनकर्ता द्वारा उद्धेश्यपूर्ण पद्धति अपनाई गई हैं क्योंकि हनुमानगढ जिले में महिलाओं की जनसंख्या अधिक हैं। शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए अपने शोध क्षेत्र की ७ तहसीलों से कुल ७०० महिलाओं के समूह को शोधार्थी ने देव निदर्शन पद्धति अपनाते हुए चुना। इसके पश्चात शोधार्थी ने उद्धेश्यपूर्ण पद्धति को अपनाते हुए कुल ७०० महिलाओं में से लॉटरी द्वारा ३०० महिलाओं को चयनित किया गया।

शोध प्रविधि -

शोधार्थी द्वारा महिलाओं से प्रश्न पूछकर उत्पीडन के मामलों में घरेलू हिंसा का अनदेखा आंकडा क्या रहा ये सारणीयन पद्धति अपनाते हुए आवृति और प्रतिशत से ज्ञात करने का प्रयास किया हैं। आंकडों का विश्लेषण भी किया गया हैं।

निष्कर्ष -

समाज में जब ऐसी महिलाएं जो सामाजिक व मनोवैज्ञानिक रूप से हिंसा का शिकार हुई उनसे शोधार्थी द्वारा प्रश्न पूछने पर जो वास्तविक स्थिति सामने आयी वो बहुत ही ज्यादा तकलीफदायक थी। इन मामलों से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं -

- इस शोध के परिणाम से यह स्पष्ट होता हैं कि महिलायें कामकाजी हो या गैरकामकाजी उनकी मानसिक स्थिति में सार्थक अंतर पाया गया हैं। उनका कार्यक्षेत्र घर हो या बाहर काम के दोहरे बोझ ने उनकी मानसिकता पर दुष्प्रभाव डाला जिस कारण अधिकांश महिलाएं माइग्रेन का शिकार हुई।
- शोधार्थी द्वारा जब शोधकार्य पूरा किया गया तो उसके सामने समाज का नया पक्ष आया कि शहरी व ग्रामीण महिलाओं की मानसिक स्थिति तथा पढी लिखी व अनपढ महिलाओं की मानसिक स्थिति में सार्थक अंतर हैं। इसलिये महिला का पढा लिखा होना जरूरी हैं जो उसे अधिकारों के लिए सजग बनाता हैं।
- जागरूकता अभियानों ने प्रत्येक वर्ग की महिला की सोच को प्रभावित किया हैं जिस कारण कामकाजी व शिक्षित शहरी महिला गैरकामकाजी व अशिक्षित ग्रामीण महिला की अपेक्षा आर्थिक व मानसिक रूप से सुदृढ रही और उसने जल्दी ही खुद को संभाला व अपने परिवार को भी।
- शोध संबंधी आंकडों ने यह स्पष्ट किया हैं कि कामकाजी महिलाओं में गैरकामकाजी महिलाओं से जीवन जीने के प्रति अधिक उत्साह हैं। काम की अधिकता भी उनके हौंसलों को तोड नही पायी। घरेलू हिंसा का सामना कर आज भी वह अपने जीवन को पटरी पर लाने की जह्दोजेहद में हैं। नारी को स्वंय विकट परिस्थितियों का सामना कर अपने जीवन को बेहतर बनाना होगा।
- सरकार द्वारा चलाये गये अभियानों का प्रभाव बहुत हद तक देखने को मिला हैं पर अभी बहुत सारी ऐसी महिलाऐ हैं जिन तक ये जागरूकता पहुंचानी बाकी हैं।
- तकनीकी नवाचारों ने समाज की सोच में काफी बदलाव ला दिये है। यहां के लोगों की पहले जैसी मानसिकता अब कम देखने को मिलती हैं। आज की पीढी अपने अधिकारों के प्रति काफी सजग हो गई हैं।

सुझाव -

महिलाओं को धर्म में बहुत इज्जत , मान-सम्मान और अधिकार मिले हैं। परंतु क्या महिलाओं को उसी संदर्भ में आदर, सम्मान व अधिकार समाज दे पाया हैं जिनकी वो हकदार हैं क्योंकि हमारे समाज की व्यवस्था पितृसत्तात्मक हैं जो महिलाओं को अपने बराबर खडा करने की कभी सोच भी नही सकता। इस बात को स्वीकार करने में कोई संशय नही हैं कि आजाद भारत में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय हैं और ये हर प्रकार की सामाजिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। कोरोना की वजह से महिलाओं के विकास की गति बहुत ही धीमी हो गई हैं इनके विकास के लिये आवश्यक हैं कि सरकार के द्वारा कुछ नये नियम व कानून पारित किये जाये जिससे वे सही अर्थों में अपने भविष्य के बारे में विचारें और अपने निर्णय लें। जिससे उनके विकास की नई राहें खुलें।

महिलायें अपनी बौद्धिक क्षमता का आंकलन करें जिससे उन्हें आगे बढने के अवसर मिलें। तथ्यों से ये स्पष्ट होता हैं कि महिलाओं की निम्न परिस्थिति का कारण अशिक्षा व गरीबी हैं।

- सरकार द्वारा ऐसे कार्यक्रमों को प्रत्येक वर्ग की महिलाओं के लिए उपलब्ध करवाये जाने चाहिए, जो आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछडी हुई हैं।
- जागृति-बैक टू वर्क योजना २०२१ का लाभ प्रत्येक महिला तक पहुंचें। इसके लिये सरकार द्वारा घर-घर जाकर सम्पर्क कर समय-समय पर जानकारी एकत्रित कर उनको सहायता उपलब्ध करवाया जाना चाहिये।
- आई एम शक्ति उडान योजना एवं जागृति जैसे कार्यक्रमों को जन ते पहुंचाने के लिए सरकार द्वारा समय- समय पर ये आयोजन किये जाने चाहिये।
- आवाज अभियान पुलिस प्रशासन द्वारा आरम्भ किया गया जिसमें महिलाओं को घरेलू हिंसा के प्रति जागरूक करना एवं अधिकारों की जानकारी उन तक पहुंचे यह अथक प्रयास किये गये।

समाहार -

प्रस्तुत शोध भावी अनुसंधानों हेतु एक सुनिश्चित शोध मार्ग प्रशास्त करता हैं। यह शोध कार्य ज्ञान के सागर में एक बूंद के समान हैं फिर भी यह महिलाओं की मानसिक , सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के विस्तृत ज्ञान भण्डार में कुछ स्थितियों का पता लगाकर एक अंश के रूप में सामने लाने का प्रयास किया हैं , ऐसा विश्वास हैं।

संदर्भ सूची -

- कुमार, शरत सबसे पहले लॉकडाउन- सबसे ज्यादा टेस्टिंग, कोरोना से ऐसे लड रहा हैं राजस्थान,aaj.tak.in
- गुलाटी, नलिनी कोविड १९ : लॉकडाउन घरेलू हिंसा, ideaforindia.in
- नेहा रेड्डी, कोरोना के साइड इफेक्ट : घरेलू हिंसा के बढते मामलों ने किया देशा भर को चिंतित
- डॉ अमित दुबे, शोध आलेख, पत्रिका इलाहाबाद।
- लॉकडाउन में बढती घरेलू हिंसा : आपदा के समय महिलाओं के लिए इम्तिहान, thewirehindi.com
- दयानिधि, कोरोना काल में भारतीय महिलाओं को हो रही हैं सबसे अधिक परेशानी : रिपोर्ट down to earth.org.in